। होम।

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा जिसका दुनियां के सभी धर्म – हिन्दू धर्म बुद्ध निष्कलंक अवतार के रूप में, मुस्लिम इमाम मेंहेदी के रूप में, ईसाई ईसा रूह अल्ला के दोबारा प्रगट होने के रूप में व सिक्ख धर्म पार पुरूख के रूप में इन्तजार कर रहें हैं, वह इस दुनियाँ में प्रगट हो चुके हैं। उनका ज्ञानमयी स्वरूप जिसको हम श्री कुलजम स्वरूप साहेब के नाम से जानते हैं, आज से लगभग साढ़े तीन सौ वर्ष पहले आ चुका है लेकिन उसकी पताका इस भौतिक संसार में कभी नहीं लहराई, क्योंकि यह सृष्टि इस राह पर चल नहीं पाई। इस कारण इस संसार में एक धर्म की स्थापना हो ही नहीं पायी। जिस राह पर कुछ लेना न देना, कुछ मिलना न मिलाना, सोचना न समझना बस चलना ही चलना है, इस मार्ग को प्रेम का मार्ग कहा जाता है और इसी को उर्दु में इश्क के नाम से पुकारते हैं।

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा ने अपनी ब्रह्म आत्माओं के साथ धरातल वासियों को अनन्य प्रेम की झलक दिखलाने के लिये द्वापर युग में अपने आवेश को श्री .ष्ण के तन पर और ब्रह्म आत्माओं की सुरता को गोपियों के तन पर उतारा । वह अनन्य प्रेम श्री .ष्ण व गोपियों के बीच ही सीमित रहा व चौरासी कोस की सीमा क्षेत्र से बाहर न आकर वहीं समा गया। इस दुनियां के लोग उस प्रेम की राह पर चल नहीं पाये क्योंकि संसारी चाल कर्म–धर्म की है जिसमें लेना देना विद्यमान है, प्रेम में लेना कुछ नहीं, देना ही देना है। सौभाग्य वश वे प्रेम पगी गोपियां, महाप्रभु की अर्धागिनियाँ – श्री पारब्रह्म की दुलहनें, वातनी स्वरूपों से इस दुःख रूपी संसार में अब भी अभौतिकी तनों से यहीं विचर रहीं है जिन्हें वापिस ले जाने के लिये परात्पर श्री पारब्रह्म पुरूषोत्तम का इश्कमय स्वरूप श्री श्री श्री १२,००१ श्री राज रतन जी के सरूप में इस धरा पर अवतरित हो चुका है।

इस धरा पर जब भी किसी शक्ति ने अवतार लिया तो उसने मानव जाति का उद्धार ही किया। परन्तु इस बार तो सर्वोपरि व सर्वशक्तिमान पूर्णब्रह्म परमात्मा इस धरा पर उतरे हैं, इसलिए वह उपहार प्राप्त होगा जिसका ब्रह्माण्ड सदा अभिलाषी और मोहताज रहा है जो कि ब्रह्माण्ड को मिलना अति दुर्लभ था और वह अमूल्य उपहार है – अखण्ड़ मुक्ति (जन्म मरण से) व अनन्त अखण्ड सुखों की प्राप्ति। सावधान! महाप्रलय भी तैयार खड़ी है आदेश जारी हो चुका है, अवसर निकला जा रहा है......... ऐसा ना हो कि हम बहुमूल्य मुक्तिनिधि को प्राप्त करने के अवसर से वंचित रह जाए।

©piyaji.com 2010

The Supreme God, the One and the Only One for whom all the religions in the world have been waiting so far, be it the "Hindu religion" waiting for his arrival in the form of "Budh Nishkalank Avtaar", Muslims in the form of "Imam Mehndi", Christians waiting for the "Second coming of Christ", and the "Sikh religion" in the form of "Paar Purukh", has already arrived in this world. Although His form of Knowledge, known as 'Shri Kuljam Swaroop Sahib', had appeared in this world around 300 years ago, but it could not be established in this materialistic world, because this world was unable to follow the path of love as described in the Holy Scripture. This is the reason why One Common Religion could not be established in this world. This is the path of love for God, where there's no give and take, no materialistic gain, nothing to think of the worldy things at all, what one needs to do is to just follow this path blindly with true faith in him, also known as the path of "Ishq" in Urdu and "Mohabbat" in Hindi.

To give a glimpse of the Infinite Love to the denizens of this world along with His souls, God incarnated himself in the body of "Shree Krishna" (Lord Krishna) and his souls into the bodies of "Gopies" (the female devotees of Lord Krishna) in "Dvapar Yug". This Infinite Love remained only between Lord Krishna and his Gopies, and it could not be felt / this path of love could not be followed by the rest of the world as it remained confined in a limited space of 84 hectares. The people of this world could not follow that path of love because they follow the path of their religion, in which there is give and take (i.e., whenever they perform some deeds, they look for good results like materialistic gain in return), whereas in the path of love, you can only give and keep on giving without expecting something back in return. Fortunately, those "madly in love" Gopies, the souls of the Supreme God - the brides of "Shree Parbramha", are still residing in this miserable world in the form of spirit in human bodies. And to take them back, the "Ishqmayi Swaroop" (spirit of love) of the Supreme God has already appeared in the form of 'Shri Shri Shri 12,001 Shri Raj Ratan Ji'.

Whenever a holy spirit has descended on this earth in one form or the other, it has always benefitted the humanity. But this time, the most powerful of all, the omnipotent and omnipresent, the one and the only one, the Supreme God himself, has descended on this earth, therefore, the universe will be awarded the most precious gift, for which this universe has always craved for, and which was extremely difficult to attain - that is, eternal salvation from life and death cycle, and infinite & eternal happiness.

Attention! The doomsday is nearing, the order has been proclaimed, and the opportunity is slowly slipping out from our hands….. it should not be that we lose this invaluable opportunity of obtaining eternal salvation.

©piyaji.com 2010